कक्षा 10 · संस्कृतम् (122) · शेमुषी द्वितीयो भागः

द्वितीयः पाठः
बुद्धिर्बलवती सदा

'शुकसप्ततिः' इति कथाग्रन्थात् सम्पादितः · कथा (गद्य + श्लोक + संवाद)

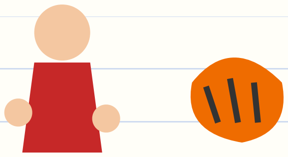

पाठ-परिचयः

प्रस्तुतः पाठः '**शुकसप्ततिः**' इति कथाग्रन्थात् सम्पादनं कृत्वा सङ्गृहीतः। अत्र स्वलघुपुत्राभ्यां सह काननमार्गेण पितृगृहं प्रति गच्छन्त्याः **बुद्धिमती**-नाम्न्याः महिलायाः **मतिकौशलं** प्रदर्शितम्। सा पुरतः समागतं व्याघ्रम् अपि भीतिम् उत्पाद्य ततः निवारयति। इयं कथा नीतिनिपुणयोः **शुकसारिकयोः** संवादमाध्यमेन सद्वृत्तेः विकासार्थं प्रेरयति।

★ **परीक्षा-सुझाव:** **कथा-सार:** देउल गाँव के राजपुत्र राजसिंह की पत्नी बुद्धिमती दो पुत्रों के साथ पिता के घर जा रही थी। घने जंगल में बाघ दिखा तो उसने ढिठाई से दोनों पुत्रों को थप्पड़ मारकर कहा, 'एक-एक बाघ खाने के लिए क्यों झगड़ते हो? इसी एक को बाँटकर खा लो, फिर दूसरा ढूँढेंगे।' बाघ उसे 'व्याघ्रमारी' समझकर भाग गया। रास्ते में धूर्त सियार ने हँसी उड़ाई और बाघ को अपने गले में बाँधकर वापस ले आया। बुद्धिमती ने सियार को धमकाया: 'अरे धूर्त! पहले तूने मुझे तीन बाघ दिए थे; आज विश्वास दिलाकर एक ही लाया?' यह सुनकर गले में सियार बँधा बाघ फिर भाग गया।
सीख: '**बुद्धिर्बलवती तन्वि सर्वकार्येषु सर्वदा**': सभी कार्यों में बुद्धि ही सदा बलवती है; प्रत्युत्पन्नमति (हाज़िरजवाबी) से बड़ी विपत्ति भी टलती है।

बोर्ड में इस पाठ से (2024–2026)

वर्ष	प्रश्न	अंक
2025	Q12 गद्यांश (अस्ति देउलाख्यो ग्रामः...) पूरा; Q15 (राजपुत्रः)	5 + 1
2026	Q17 घटनाक्रम (8 वाक्य); Q15 (चपेटया); Q18 (सत्वरम्)	4 + 1 + 1
2026 (द्वितीय)	Q14 नाट्यांश (व्याघ्र-श्रृगाल संवाद) पूरा	5
2024	Q15 (मानुषात्)	1
व्याकरण	प्रत्यय 'व्याघ्रमारी' (2024), 'बुद्धिमती' (2026)	1 each

SAMPLE · notesbazar.in

पात्र-परिचय

पात्र	परिचय
बुद्धिमती	राजसिंह की पत्नी; बुद्धिमती, साहसी, प्रत्युत्पन्नमति
राजसिंहः	देउल ग्राम का राजपुत्र
व्याघ्रः	बलवान पर डरपोक, मूर्ख; 'गृहीतकरजीवितः'
श्रृगालः (जम्बुकः)	धूर्त, उपहास करने वाला, स्वार्थी

2.1 मूलपाठः, हिंदी अनुवादः ★★★

अंश 1 अस्ति देउलाख्यो ग्रामः। तत्र राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसति स्म। एकदा केनापि आवश्यककार्येण तस्य भार्या बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता। मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श। सा व्याघ्रमागच्छन्तं दृष्ट्वा धाष्टर्यात् पुत्रौ चपेटया प्रहृत्य जगाद – "कथमेकैकशो व्याघ्रभक्षणाय कलहं कुरुथः? अयमेकस्तावद्विभज्य भुज्यताम्। पश्चाद् अन्यो द्वितीयः कश्चिल्लक्ष्यते।" इति श्रुत्वा व्याघ्रमारी काचिदियमिति मत्वा व्याघ्रो भयाकुलचित्तो नष्टः।

> **अनुवादः** देउल नामक गाँव है। वहाँ राजसिंह नामक राजपुत्र रहता था। एक बार किसी आवश्यक कार्य से उसकी पत्नी बुद्धिमती दोनों पुत्रों के साथ पिता के घर की ओर चली। रास्ते में घने जंगल में उसने एक बाघ देखा। आते हुए बाघ को देखकर उसने ढिठाई से दोनों पुत्रों को थप्पड़ मारकर कहा, "एक-एक (बाघ) को खाने के लिए क्यों झगड़ते हो? इसी एक को बाँटकर खा लो। बाद में कोई दूसरा ढूँढ़ा जाएगा।" यह सुनकर 'यह कोई बाघ को मारने वाली है' ऐसा मानकर डरे हुए चित्त वाला बाघ भाग गया।

श्लोक 1 निजबुद्ध्या विमुक्ता सा भयाद् व्याघ्रस्य भामिनी। अन्योऽपि बुद्धिमाँल्लोके मुच्यते महतो भयात्॥

> **अन्वयः:** सा भामिनी निजबुद्ध्या व्याघ्रस्य भयात् विमुक्ता। लोके अन्यः अपि बुद्धिमान् महतः भयात् मुच्यते।
> **अर्थः** वह क्रोधी (तेजस्विनी) स्त्री अपनी बुद्धि से बाघ के भय से मुक्त हो गई। संसार में दूसरा भी बुद्धिमान व्यक्ति बड़े भय से मुक्त हो जाता है।

अंश 2 भयाकुलं व्याघ्रं दृष्ट्वा कश्चित् धूर्तः शृगालः हसन्नाह – "भवान् कुतः भयात् पलायितः?"
व्याघ्रः – गच्छ, गच्छ जम्बुक! त्वमपि किञ्चिद् गूढप्रदेशम्। यतो व्याघ्रमारीति या शास्त्रे श्रूयते तयाहं हन्तुमारब्धः परं गृहीतकरजीवितो नष्टः शीघ्रं तदग्रतः।
शृगालः – व्याघ्र! त्वया महत्कौतुकम् आवेदितं यन्मानुषादपि बिभेषि?
व्याघ्रः – प्रत्यक्षमेव मया सात्मपुत्रावेकैकशो मामत्तुं कलहायमानौ चपेटया प्रहरन्ती दृष्टा।

> **अनुवादः** डरे हुए बाघ को देखकर कोई धूर्त सियार हँसते हुए बोला, "आप किस भय से भागे हुए हैं?" बाघः जाओ, जाओ सियार! तुम भी किसी गुप्त स्थान पर (चले जाओ)। क्योंकि 'व्याघ्रमारी' जो शास्त्र में सुनी जाती है, उसने मुझे मारना आरम्भ कर दिया था, परन्तु मैं हथेली पर प्राण लेकर (जान बचाकर) शीघ्र उसके आगे से भाग आया। सियारः बाघ! तुमने बड़ा आश्चर्य बताया कि तुम मनुष्य से भी डरते हो? बाघः मैंने सामने ही उसे अपने दोनों पुत्रों को, जो मुझे खाने के लिए एक-एक करके झगड़ रहे थे, थप्पड़ से मारती हुई देखा।

अंश 3 जम्बुकः – स्वामिन्! यत्रास्ते सा धूर्ता तत्र गम्यताम्। व्याघ्र! तव पुनः तत्र गतस्य सा सम्मुखमपीक्षते यदि, तर्हि त्वया अहं हन्तव्यः इति।
व्याघ्रः – शृगाल! यदि त्वं मां मुक्त्वा यासि तदा वेलाप्यवेला स्यात्।
जम्बुकः – यदि एवं तर्हि मां निजगले बद्ध्वा चल सत्वरम्। स व्याघ्रः तथा कृत्वा काननं ययौ। शृगालेन सहितं पुनरायान्तं व्याघ्रं दूरात् दृष्ट्वा बुद्धिमती चिन्तितवती – जम्बुककृतोत्साहाद् व्याघ्रात् कथं मुच्यताम्? परं प्रत्युत्पन्नमतिः सा जम्बुकमाक्षिपन्त्यङ्गुल्या तर्जयन्त्युवाच –

> **अनुवादः** सियारः स्वामी! जहाँ वह धूर्त स्त्री है, वहाँ चलिए। बाघ! तुम्हारे फिर वहाँ जाने पर यदि वह सामने भी देखे, तो तुम मुझे मार देना। बाघः सियार! यदि तुम मुझे छोड़कर चले जाओ तो (समझौते की) शर्त भी बेशर्त हो जाएगी। सियारः यदि ऐसा है तो मुझे अपने गले में बाँधकर जल्दी चलो। वह बाघ वैसा करके जंगल में गया। सियार के साथ फिर आते हुए बाघ को दूर से देखकर बुद्धिमती ने सोचा, 'सियार द्वारा उत्साहित किए गए बाघ से कैसे छूटा जाए?' परन्तु प्रत्युत्पन्नमति (तुरन्त बुद्धि वाली) उसने सियार की भर्त्सना करते हुए, उँगली से धमकाते हुए कहा –

श्लोक 2–3 रे रे धूर्त त्वया दत्तं मह्यं व्याघ्रत्रयं पुरा। विश्वास्याद्यैकमानीय कथं यासि वदाधुना॥ इत्युक्त्वा धाविता तूर्णं व्याघ्रमारी भयङ्करा। व्याघ्रोऽपि सहसा नष्टः गलबद्धशृगालकः॥

> **अन्वयः:** रे रे धूर्त! त्वया मह्यं पुरा व्याघ्रत्रयं दत्तम्। विश्वास्य (अपि) अद्य एकम् आनीय कथं यासि (इति) अधुना वद। इति उक्त्वा भयङ्करा व्याघ्रमारी तूर्णं धाविता। गलबद्धशृगालकः व्याघ्रः अपि सहसा नष्टः।
> **अर्थः** अरे धूर्त! तूने मुझे पहले तीन बाघ दिए थे। विश्वास दिलाकर भी आज एक ही लाकर कैसे जा रहा है, अब बोल! ऐसा कहकर भयंकर व्याघ्रमारी तेज़ी से दौड़ी। गले में बँधे सियार वाला बाघ भी अचानक भाग गया।

SAMPLE · notesbazar.in

उपसंहारः एवं प्रकारेण बुद्धिमती व्याघ्रजाद् भयात् पुनरपि मुक्ताऽभवत्। अत एव उच्यते – बुद्धिर्बलवती तन्वि सर्वकार्येषु सर्वदा॥

> **अर्थः** इस प्रकार बुद्धिमती बाघ से उत्पन्न भय से फिर से मुक्त हो गई। इसीलिए कहा जाता है: हे सुन्दरी! सभी कार्यों में सदा बुद्धि ही बलवती है।

★ **परीक्षा-सुझाव: ग्रन्थ-परिचय:** शुकसप्तति: (काल 1000–1400 ई.); हेमचन्द्र (1088–1172) ने उल्लेख किया; 14वीं शताब्दी में फ़ारसी अनुवाद '**तूतिनामह**'। सेठ हरिदत्त का पुत्र मदनविनोद कुमार्गगामी था; मित्र त्रिविक्रम ने नीतिनिपुण शुक-सारिका दिए; शुक की कहानियों से उसका हृदय-परिवर्तन हुआ।

शब्दार्थाः ★★

शब्दः	संस्कृतार्थः	हिंदी
भार्या	पत्नी	पत्नी
पुत्रद्वयोपेता	पुत्रद्वयेन सहिता	दोनों पुत्रों के साथ
कानने	वने	जंगल में
ददर्श	अपश्यत्	देखा
धाष्ट्यात्	धृष्टभावात्	ढिठाई से
चपेटया	करप्रहारेण	थप्पड़ से
प्रहृत्य	प्रहारं कृत्वा	मारकर
जगाद	उक्तवती	कहा
कलहः	विवादः	झगड़ा
विभज्य	विभक्तं कृत्वा	बाँटकर
लक्ष्यते	अन्विष्यते	ढूँढ़ा जाएगा
व्याघ्रमारी	व्याघ्रं मारयति इति	बाघ को मारने वाली
नष्टः	पलायितः	भाग गया
भामिनी	कोपवती स्त्री	क्रोधी/तेजस्वी स्त्री
जम्बुकः	श्रृगालः	सियार
गूढप्रदेशम्	गुप्तप्रदेशम्	गुप्त स्थान में
गृहीतकरजीवितः	हस्ते प्राणान् नीत्वा	हथेली पर प्राण लेकर
आवेदितम्	विज्ञापितम्	बताया
प्रत्यक्षम्	समक्षम्	सामने
एकैकशः	एकम् एकं कृत्वा	एक-एक करके
अत्तुम्	भक्षयितुम्	खाने के लिए
कलहायमानौ	कलहं कुर्वन्तौ	झगड़ते हुए (दो)
ईक्षते	पश्यति	देखती है
वेला	समयः	शर्त, समय
आक्षिपन्ती	आक्षेपं कुर्वाणा	भर्त्सना करती हुई
तर्जयन्ती	तर्जनं कुर्वाणा	धमकाती हुई
विश्वास्य	समाश्वस्य	विश्वास दिलाकर
तूर्णम्	शीघ्रम्	शीघ्र

SAMPLE · notesbazar.in

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 4 of 8

सत्वरम्	शीघ्रम्	जल्दी (CBSE 2026)

भाषिकविस्तारः: ददर्श = दृश् लिट् प्र.पु. एक. · बिभेषि = भी लट् म.पु. एक. · प्रहरन्ती = प्र+हृ + शतृ (स्त्री.) · गम्यताम् = गम् कर्मवाच्य लोट् · ययौ = या लिट् प्र.पु. एक. · यासि = या लट् म.पु. एक.

NCERT अभ्यासः, पूर्णतः हलः

1. एकपदेन उत्तरत।

उत्तर: (क) बुद्धिमती कुत्र व्याघ्रं ददर्श? **गहनकानने** (ख) भामिनी कया विमुक्ता? **निजबुद्ध्या** (ग) सर्वदा सर्वकार्येषु का बलवती? **बुद्धिः** (घ) व्याघ्रः कस्मात् बिभेति? **व्याघ्रमार्याः / मानुषात्** (ङ) प्रत्युत्पन्नमतिः बुद्धिमती किम् आक्षिपन्ती उवाच? **जम्बुकम्**

2. संस्कृतभाषया उत्तरत।

उत्तर: (क) बुद्धिमती केन उपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता? **बुद्धिमती पुत्रद्वयेन उपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता।**
(ख) व्याघ्रः किं विचार्य पलायितः? **'व्याघ्रमारी काचिदियम्' इति विचार्य व्याघ्रः पलायितः।**
(ग) लोके महतो भयात् कः मुच्यते? **लोके बुद्धिमान् (जनः) महतो भयात् मुच्यते।**
(घ) जम्बुकः किं वदन् व्याघ्रस्य उपहासं करोति? **जम्बुकः 'भवान् कुतः भयात् पलायितः?' 'त्वया महत्कौतुकम् आवेदितं यन्मानुषादपि बिभेषि' इति वदन् व्याघ्रस्य उपहासं करोति।**
(ङ) बुद्धिमती शृगालं किम् उक्तवती? **बुद्धिमती शृगालम् उक्तवती – "रे रे धूर्त! त्वया मह्यं पुरा व्याघ्रत्रयं दत्तम्। विश्वास्य अद्य एकम् आनीय कथं यासि इति अधुना वद।"**

3. स्थूलपदम् आधृत्य प्रश्ननिर्माणम्

उत्तर: (क) तत्र <u>राजसिंहो</u> नाम राजपुत्रः वसति स्म। → तत्र **कः** नाम राजपुत्रः वसति स्म?
(ख) बुद्धिमती <u>चपेटया</u> पुत्रौ प्रहृतवती। → बुद्धिमती **कया** पुत्रौ प्रहृतवती? (CBSE 2026 का प्रश्न भी)
(ग) <u>व्याघ्रं</u> दृष्ट्वा धूर्तः शृगालः अवदत्। → **कम्** दृष्ट्वा धूर्तः शृगालः अवदत्?
(घ) त्वं <u>मानुषात्</u> बिभेषि। → त्वं **कस्मात्** बिभेषि? (CBSE 2024)
(ङ) पुरा त्वया <u>मह्यं</u> व्याघ्रत्रयं दत्तम्। → पुरा त्वया **कस्मै** व्याघ्रत्रयं दत्तम्?

4. घटनाक्रमानुसारेण योजयत।

उत्तर: 1. (च) बुद्धिमती पुत्रद्वयेन उपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता। 2. (घ) मार्गे सा एकं व्याघ्रम् अपश्यत्। 3. (ङ) व्याघ्रं दृष्ट्वा सा पुत्रौ ताडयन्ती उवाच – अधुना एकमेव व्याघ्रं विभज्य भुज्यताम्। 4. (क) व्याघ्रः 'व्याघ्रमारी इयम्' इति मत्वा पलायितः। 5. (ग) जम्बुककृतोत्साहः व्याघ्रः पुनः काननम् आगच्छत्। 6. (ख) प्रत्युत्पन्नमतिः सा शृगालम् आक्षिपन्ती उवाच। 7. (छ) 'त्वं व्याघ्रत्रयम् आनेतुं प्रतिज्ञाय एकमेव आनीतवान्।' 8. (ज) गलबद्धशृगालकः व्याघ्रः पुनः पलायितः।

5. सन्धिः / सन्धिविच्छेदः

उत्तर: (क) पितुर्गृहम् = पितुः + गृहम् (ख) एकैकः = एक + एकः (वृद्धि) (ग) अन्योऽपि = अन्यः + अपि (घ) इत्युक्त्वा = इति + उक्त्वा (यण्) (ङ) यत्रास्ते = यत्र + आस्ते (दीर्घ)

6. अर्थं चित्वा लिखत।

उत्तर: ददर्श = **दृष्टवान्** · जगाद = **अकथयत्** · ययौ = **गतवान्** · अत्तुम् = **खादितुम्** · मुच्यते = **मुक्तो भवति** · ईक्षते = **पश्यति**

7. (अ) पर्यायपदानि (आ) विपरीतार्थकानि

उत्तर: (अ) वनम् = **काननम्** · शृगालः = **जम्बुकः** · शीघ्रम् = **सत्वरम् / तूर्णम्** · पत्नी = **भार्या** · गच्छसि = **यासि**
(आ) प्रथमः × **द्वितीयः** · उक्त्वा × **श्रुत्वा** · अधुना × **पुरा** · अवेला × **वेला** · बुद्धिहीना × **बुद्धिमती**

CBSE बोर्ड प्रश्नाः 2024–2026, हल सहित

CBSE 2025 · 52 **गद्यांशः (Q12, 5 अंक):** अस्ति देउलाख्यो ग्रामः। तत्र राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसति स्म। एकदा केनापि आवश्यककार्येण तस्य भार्या बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता। मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श। सा व्याघ्रमागच्छन्तं दृष्ट्वा धाष्र्ट्यात् पुत्रौ चपेटया प्रहृत्य जगाद – "कथमेकैकशो व्याघ्रभक्षणाय कलहं कुरुथः? अयमेकस्तावद्विभज्य भुज्यताम्। पश्चाद् अन्यो द्वितीयः कश्चिल्लक्ष्यते।"

> **उत्तर: (i) एकपदेन (2 × ½):** (क) राजसिंहः कुत्र वसति स्म? **ग्रामे / देउलाख्ये ग्रामे** (ख) बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता कुत्र चलिता? **पितुर्गृहम्** (ग) सा कुत्र एकं व्याघ्रं ददर्श? **गहनकानने**
> **(ii) पूर्णवाक्येन (2 × 1):** (क) सा पुत्रौ चपेटया प्रहृत्य किम् जगाद? **सा पुत्रौ चपेटया प्रहृत्य जगाद – "कथमेकैकशो व्याघ्रभक्षणाय कलहं कुरुथः? अयमेकस्तावद् विभज्य भुज्यताम्। पश्चाद् अन्यो द्वितीयः कश्चिल्लक्ष्यते।"** (ख) एकदा का पितुः गृहं प्रति चलिता? **एकदा राजसिंहस्य भार्या बुद्धिमती पितुः गृहं प्रति चलिता।** (ग) बुद्धिमती किमर्थं पितृगृहं प्रति चलिता? **बुद्धिमती केनापि आवश्यककार्येण पितृगृहं प्रति चलिता।**
> **(iii) भाषिककार्यम् (2 × 1):** (क) 'जगाद' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्? **सा (बुद्धिमती)** (ख) 'व्याघ्रम्' इति पदस्य विशेषणपदं किम्? **एकम् / आगच्छन्तम्** (ग) 'अपश्यत्' इत्यस्य पर्यायः? **ददर्श**
> अंक-योजना: पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग स्वीकार्य; आंशिक सही उत्तर पर आंशिक अंक।

CBSE 2026 · 52/4 **घटनाक्रमानुसारं योजयत (Q17, 8 × ½ = 4):** (i) तत्र राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसति स्म। (ii) सा व्याघ्रमागच्छन्तं दृष्ट्वा धाष्र्ट्यात् पुत्रौ चपेटया प्रहृत्य जगाद। (iii) अस्ति देउलाख्यो ग्रामः। (iv) पश्चाद् अन्यो द्वितीयः कश्चिद् लक्ष्यते। (v) मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श। (vi) अयमेकस्तावद् विभज्य भुज्यताम्। (vii) कथमेकैकशो व्याघ्रभक्षणाय कलहं कुरुथः? (viii) तस्य भार्या बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता।

> **उत्तर:** सही क्रम: **(iii) → (i) → (viii) → (v) → (ii) → (vii) → (vi) → (iv)**
> 1. अस्ति देउलाख्यो ग्रामः। 2. तत्र राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसति स्म। 3. तस्य भार्या बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता। 4. मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श। 5. सा व्याघ्रमागच्छन्तं दृष्ट्वा ... जगाद। 6. कथमेकैकशो व्याघ्रभक्षणाय कलहं कुरुथः? 7. अयमेकस्तावद् विभज्य भुज्यताम्। 8. पश्चाद् अन्यो द्वितीयः कश्चिद् लक्ष्यते।

CBSE 2026 द्वितीय · 52 **नाट्यांशः (Q14, 5 अंक):** भयाकुलं व्याघ्रं दृष्ट्वा कश्चित् धूर्तः शृगालः हसन्नाह – "भवान् कुतः भयात् पलायितः?" व्याघ्रः – गच्छ, गच्छ जम्बुक! त्वमपि किञ्चिद् गूढप्रदेशम्। यतो व्याघ्रमारीति या शास्त्रे श्रूयते तयाहं हन्तुमारब्धः परं गृहीतकरजीवितो नष्टः शीघ्रं तदग्रतः। शृगालः – व्याघ्र! त्वया महत्कौतुकम् आवेदितं यन्मानुषादपि बिभेषि? व्याघ्रः – प्रत्यक्षमेव मया सात्मपुत्रावेकैकशो मामत्तुं कलहायमानौ चपेटया प्रहरन्ती दृष्टा। जम्बुकः – स्वामिन्! यत्रास्ते सा धूर्ता तत्र गम्यताम्। ... व्याघ्रः – शृगाल! यदि त्वं मां मुक्त्वा यासि तदा वेलाप्यवेला स्यात्। जम्बुकः – यदि एवं तर्हि मां निजगले बद्ध्वा चल सत्वरम्। स व्याघ्रः तथा कृत्वा काननं ययौ।

> **उत्तर: (i) एकपदेन:** (क) 'पुत्रौ चपेटया प्रहरन्ती मया दृष्टा' इति कः वदति? **व्याघ्रः** (ख) व्याघ्रः शृगालं कुत्र गन्तुं कथयति? **गूढप्रदेशम्** (ग) व्याघ्रः तथा कृत्वा कुत्र अगच्छत्? **काननम्**
> **(ii) पूर्णवाक्येन:** (क) भयाकुलं व्याघ्रं दृष्ट्वा शृगालः हसन् किम् अवदत्? **भयाकुलं व्याघ्रं दृष्ट्वा शृगालः हसन् अवदत् – "भवान् कुतः भयात् पलायितः?"** (ख) का शास्त्रे श्रूयते? **व्याघ्रमारी इति या शास्त्रे श्रूयते।** (ग) शृगालः स्वामिनं कुत्र गन्तुं कथयति? **शृगालः स्वामिनं कथयति – "यत्रास्ते सा धूर्ता तत्र गम्यताम्।"**
> **(iii) निर्देशानुसारम्:** (क) 'मुक्त्वा' इत्यस्य विपरीतार्थकं पदम्? **बद्ध्वा** (ख) 'धूर्तः शृगालः' अत्र विशेष्यपदम्? **शृगालः** (ग) 'गच्छ त्वमपि किञ्चिद् गूढप्रदेशम्' अत्र 'गच्छ' क्रियायाः कर्तृपदम्? **त्वम्**

CBSE 2026 · 52/4 यदि एवं तर्हि मां निजगले बद्ध्वा <u>सत्वरम्</u> चल। (A) शीघ्रम् (B) सत्यम् (C) वनम् (D) अनृतम्

> **उत्तर: (A) शीघ्रम्**

CBSE 2026 · 52/4 बुद्धिमती आत्मपुत्रौ <u>चपेटया</u> प्रहरन्ती जगाद। (प्रश्ननिर्माणम्)

> **उत्तर:** बुद्धिमती आत्मपुत्रौ **कया** प्रहरन्ती जगाद?

CBSE 2025 · 52 तत्र राजसिंहः नाम <u>राजपुत्रः</u> वसति स्म।

> **उत्तर:** तत्र राजसिंहः नाम **कः** वसति स्म?

CBSE 2024 · 52-4 त्वं <u>मानुषात्</u> बिभेषि।

> **उत्तर:** त्वं **कस्मात्** बिभेषि? ('भी' धातु के योग में पञ्चमी)

प्रत्यय (व्याकरण अध्याय में हल): इयं काचित् व्याघ्रमारी इति → व्याघ्रमार + ङीप् (2024) · पुत्रद्वयोपेता बुद्धि + मतुप् → बुद्धिमती (2026)

अभ्यासः: बोर्ड-शैली प्रश्नाः उत्तर सहित

गद्यांश A: शृगालेन सहितं पुनरायान्तं व्याघ्रं दूरात् दृष्ट्वा बुद्धिमती चिन्तितवती – जम्बुककृतोत्साहाद् व्याघ्रात् कथं मुच्यताम्? परं प्रत्युत्पन्नमतिः सा जम्बुकमाक्षिपन्त्यङ्गुल्या तर्जयन्त्युवाच – रे रे धूर्त त्वया दत्तं मह्यं व्याघ्रत्रयं पुरा। विश्वास्याद्यैकमानीय कथं यासि वदाधुना॥

> **उत्तर:** (i) एकपदेन: (क) बुद्धिमती व्याघ्रं कस्मात् दृष्टवती? **दूरात्** (ख) बुद्धिमती कया तर्जयन्ती उवाच? **अङ्गुल्या** (ग) शृगालेन मह्यं पुरा किं दत्तम्? **व्याघ्रत्रयम्**
> (ii) पूर्णवाक्येन: (क) बुद्धिमती किं चिन्तितवती? **बुद्धिमती चिन्तितवती – जम्बुककृतोत्साहाद् व्याघ्रात् कथं मुच्यताम्?** (ख) प्रत्युत्पन्नमतिः सा किं कृत्वा उवाच? **प्रत्युत्पन्नमतिः सा जम्बुकम् आक्षिपन्ती अङ्गुल्या तर्जयन्ती उवाच।**
> (iii) भाषिककार्यम्: (क) 'धूर्त' इति सम्बोधनं कस्मै? **जम्बुकाय (शृगालाय)** (ख) 'आयान्तम्' इति विशेषणस्य विशेष्यम्? **व्याघ्रम्** (ग) 'समीपात्' इत्यस्य विलोमम्? **दूरात्**

श्लोक-भावार्थ-पूर्तिः: निजबुद्ध्या विमुक्ता सा भयाद् व्याघ्रस्य भामिनी। अन्योऽपि बुद्धिमाँल्लोके मुच्यते महतो भयात्॥
भावार्थः: सा (i) ___ स्वबुद्ध्या एव (ii) ___ भयात् मुक्ता अभवत्। एवमेव लोके अन्यः अपि (iii) ___ जनः (iv) ___ भयात् मुक्तः भवति। (मञ्जूषा: महतः, भामिनी, बुद्धिमान्, व्याघ्रस्य)

> **उत्तर:** (i) भामिनी (ii) व्याघ्रस्य (iii) बुद्धिमान् (iv) महतः

अन्वय-पूर्तिः: इत्युक्त्वा धाविता तूर्णं व्याघ्रमारी भयङ्करा। व्याघ्रोऽपि सहसा नष्टः गलबद्धशृगालकः॥ → इति (i) ___ भयङ्करा व्याघ्रमारी (ii) ___ धाविता। (iii) ___ व्याघ्रः अपि (iv) ___ नष्टः। (मञ्जूषा: सहसा, उक्त्वा, गलबद्धशृगालकः, तूर्णम्)

> **उत्तर:** (i) उक्त्वा (ii) तूर्णम् (iii) गलबद्धशृगालकः (iv) सहसा

प्रश्ननिर्माणम्

> **उत्तर:** (क) व्याघ्रः भयाकुलचित्तः नष्टः। → **कः** भयाकुलचित्तः नष्टः?
> (ख) बुद्धिमती पितुर्गृहं प्रति चलिता। → बुद्धिमती **कुत्र** प्रति चलिता?
> (ग) धूर्तः शृगालः हसन् आह। → **कीदृशः** शृगालः हसन् आह?
> (घ) माम् निजगले बद्ध्वा चल। → माम् **कुत्र** बद्ध्वा चल?
> (ङ) सा व्याघ्रात् मुक्ता अभवत्। → सा **कस्मात्** मुक्ता अभवत्?

प्रसङ्गानुकूलम् अर्थः

> **उत्तर:** (क) भार्या बुद्धिमती → पत्नी (ख) सा एकं व्याघ्रं ददर्श → अपश्यत् (ग) जम्बुक! → शृगाल (घ) व्याघ्रो नष्टः → पलायितः (ङ) धाविता तूर्णम् → शीघ्रम् (च) सम्मुखमपि ईक्षते → पश्यति (छ) चपेटया → करप्रहारेण

समास / प्रत्यय (पाठात्)

> **उत्तर:**

पदम्	विग्रहः / प्रत्ययः	प्रकारः
गलबद्धशृगालकः	गले बद्धः शृगालः यस्य सः	बहुव्रीहिः
प्रत्युत्पन्नमतिः	प्रत्युत्पन्ना मतिः यस्याः सा	बहुव्रीहिः
जम्बुककृतोत्साहात्	जम्बुकेन कृतः उत्साहः यस्य सः, तस्मात्	बहुव्रीहिः
पुत्रद्वयोपेता	पुत्रद्वयेन उपेता	तृतीया तत्पुरुषः
भयाकुलचित्तः	भयेन आकुलं चित्तं यस्य सः	बहुव्रीहिः
गृहीतकरजीवितः	गृहीतं करे जीवितं येन सः	बहुव्रीहिः

व्याघ्रमारी	व्याघ्रं मारयति इति (व्याघ्रमार + ङीप्)	उपपद / स्त्रीप्रत्ययः
बुद्धिमती	बुद्धि + मतुप् + ङीप्	तद्धितः
दृष्ट्वा, श्रुत्वा, उक्त्वा	दृश्/श्रु/वच् + क्त्वा	कृत्
प्रहृत्य, विभज्य	प्र+हृ / वि+भज् + ल्यप्	कृत्

हन् धातुः (लट्): हन्ति हतः घ्नन्ति · हंसि हथः हथ · हन्मि हन्वः हन्मः; लोट् म.पु. एक.: **जहि**; लङ् प्र.पु.: अहन् अहताम् अघ्नन्

बहुविकल्पीयप्रश्नाः: 20 MCQs

1. पाठः कस्मात् ग्रन्थात् सङ्कलितः?
   (A) हितोपदेशः (B) पञ्चतन्त्रम् (C) शुकसप्ततिः (D) कथासरित्सागरः
2. देउलग्रामे कः वसति स्म?
   (A) राजसिंहः (B) व्याघ्रः (C) बुद्धिसिंहः (D) शृगालः
3. बुद्धिमती कुत्र चलिता?
   (A) वनम् (B) नगरम् (C) देवालयम् (D) पितुर्गृहम्
4. बुद्धिमती व्याघ्रं कुत्र ददर्श?
   (A) नगरे (B) गहनकानने (C) गृहे (D) नदीतटे
5. बुद्धिमती पुत्रौ केन प्रहृतवती?
   (A) दण्डेन (B) चपेटया (C) पाषाणेन (D) खड्गेन
6. व्याघ्रः बुद्धिमतीं का इति मत्वा पलायितः?
   (A) देवी (B) डाकिनी (C) राक्षसी (D) व्याघ्रमारी
7. 'जम्बुकः' इत्यस्य अर्थः:
   (A) शृगालः (B) सिंहः (C) व्याघ्रः (D) वानरः
8. 'गृहीतकरजीवितः' कः?
   (A) शृगालः (B) राजसिंहः (C) व्याघ्रः (D) पुत्रः
9. शृगालः व्याघ्रं किं कर्तुं कथयति?
   (A) युद्धं कर्तुम् (B) पलायितुम् (C) शयितुम् (D) स्वगले बद्ध्वा गन्तुम्
10. 'वेलाप्यवेला स्यात्' इति कः वदति?
    (A) शृगालः (B) व्याघ्रः (C) बुद्धिमती (D) पुत्रः
11. बुद्धिमती शृगालं कया तर्जयन्ती उवाच?
    (A) दण्डेन (B) हस्तेन (C) अङ्गुल्या (D) चपेटया
12. शृगालेन पुरा कति व्याघ्राः दत्ताः?
    (A) त्रयः (B) द्वौ (C) चत्वारः (D) एकः
13. 'तूर्णम्' इत्यस्य अर्थः:
    (A) शनैः (B) शीघ्रम् (C) दूरम् (D) समीपम्
14. 'बुद्धिर्बलवती तन्वि सर्वकार्येषु सर्वदा' इत्यत्र 'तन्वि' इति सम्बोधनं:
    (A) पुत्राय (B) व्याघ्राय (C) सुन्दर्यै स्त्रियै (D) शृगालाय
15. 'ददर्श' इति क्रियापदे लकारः:
    (A) लृट् (B) लट् (C) लङ् (D) लिट्
16. 'पितुर्गृहम्' सन्धिविच्छेदः:
    (A) पितुः + गृहम् (B) पितुर् + गृहम् (C) पिता + गृहम् (D) पितु + गृहम्
17. 'प्रत्युत्पन्नमतिः' समासः:
    (A) बहुव्रीहिः (B) द्विगुः (C) द्वन्द्वः (D) अव्ययीभावः
18. 'यासि' इत्यस्य अर्थः:
    (A) याचसि (B) पश्यसि (C) वदसि (D) गच्छसि
19. 'अधुना' इत्यस्य विलोमपदम्:
    (A) सदा (B) पुरा (C) सहसा (D) तत्र
20. शुकसप्ततेः फ़ारसी-अनुवादस्य नाम:
    (A) अनवारे सुहैली (B) शाहनामा (C) तूतिनामह (D) कलीला-दिमना

1 (C) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (B) · 5 (B) · 6 (D) · 7 (A) · 8 (C) · 9 (D) · 10 (B) · 11 (C) · 12 (A) · 13 (B) · 14 (C) · 15 (D) · 16 (A) · 17 (A) · 18 (D) · 19 (B) · 20 (C)

कथन-कारण (6)

(A) दोनों सही, कारण सही व्याख्या। (B) दोनों सही, कारण सही व्याख्या नहीं। (C) कथन सही, कारण गलत। (D) कथन गलत, कारण सही।

1. कथन: बाघ बुद्धिमती को देखकर भाग गया। कारण: उसने बुद्धिमती को 'व्याघ्रमारी' समझ लिया।
2. कथन: बुद्धिमती दूसरी बार भी बच गई। कारण: उसने प्रत्युत्पन्नमति से सियार को धमकाया।
3. कथन: सियार बाघ का बहुत आदर करता था। कारण: सियार ने हँसते हुए बाघ का उपहास किया।
4. कथन: बाघ ने सियार की बात तुरंत मानकर उसे छोड़ दिया। कारण: बाघ ने सियार को अपने गले में बाँध लिया।

SAMPLE · notesbazar.in

5. कथन: 'बुद्धिर्बलवती सदा' शीर्षक सार्थक है। कारण: कथा में बल पर बुद्धि की विजय दिखाई गई है।
6. कथन: शुकसप्ततिः का फ़ारसी अनुवाद 'तूतिनामह' है। कारण: बुद्धिमती राजसिंह की पत्नी थी।

उत्तर: 1 (A) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (D) · 5 (A) · 6 (B)

अंतिम-रात सारांश

- स्रोत: शुकसप्ततिः (शुक-सारिका संवाद); नायिका बुद्धिमती (राजसिंह की पत्नी, देउल ग्राम)।
- घटनाक्रम: पितृगृह-यात्रा → गहनकानन में व्याघ्र → पुत्रों को चपेटा, 'एक ही को बाँटकर खाओ' → व्याघ्र 'व्याघ्रमारी' समझकर भागा → धूर्त शृगाल का उपहास → गले में बँधा शृगाल, व्याघ्र लौटा → 'तूने तीन बाघ दिए थे, आज एक ही?' → व्याघ्र फिर भागा।
- श्लोक: निजबुद्ध्या विमुक्ता… / रे रे धूर्त… / इत्युक्त्वा धाविता… / बुद्धिर्बलवती तन्वि…
- बोर्ड: 2025 गद्यांश (प्रथम अंश), 2026 घटनाक्रम, 2026 द्वितीय नाट्यांश (व्याघ्र-शृगाल), प्रश्ननिर्माण (चपेटया/कया, राजपुत्रः/कः, मानुषात्/कस्मात्), सत्वरम् = शीघ्रम्।
- शब्द: ददर्श, जगाद, चपेटया, जम्बुकः, तूर्णम्, सत्वरम्, ईक्षते, अत्तुम्, विभज्य, लक्ष्यते।

SAMPLE · notesbazar.in